PAGE NO.:
DATE: / /

# रस सिद्धान्त

रस सिद्धान्त यद्यपि भारतीय काव्यशास्त्र में प्राचीनतम सिद्धान्त है, तथापि इसे व्यापक प्रतिष्ठा बाद में प्राप्त हुई। यही कारण है कि अलंकार सिद्धान्त को रस सिद्धान्त से प्राचीन माना जाने लगा। रस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक आचार्य भरत मुनि (200 ई. पू.) माने जाते हैं। उन्होंने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में रस के विभिन्न अवयवों का विवेचन किया, तथा 'रस सूत्र' दिया।

भरत मुनि का रस सूत्र इस प्रकार है:

"विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्ति:"

अर्थात् - "विभावानुभाव, व्यभिचारी संयोगाद्रस भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।" इस सूत्र के आधार पर ही परवर्ती आचार्यों ने रस के स्वरूप पर तथा रस निष्पत्ति पर पर्याप्त विचार किया और इससे रस सिद्धान्त का विकास हुआ।

भरत ने रस विवेचन के सम्बन्ध में जिस श्लोक को प्रस्तुत किया है उसके अनुसार - "जिस प्रकार अनेक व्यंजनों और औषधियों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार

दृष्ट छः

अनेक भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। जैसे गुड़ आदि द्रव्यों तथा औषधियों आदि से षाडवादि रस उत्पन्न होते है, वैसे ही अनेक भावों से उपगम होने से स्थायी भाव रसत्व को प्राप्त होता है।"

भरत मुनि के अनुसार रस आस्वाद न होकर आस्वाद्य है, अर्थात वह एक ऐसा तत्त्व है जिसका स्वाद लिया जा सकता है। रस के विविध अवयव समन्वित होकर ही रसत्व की प्राप्त होते है। स्पष्ट है कि वे अवयव रस नहीं है, अपितु संयुक्तावस्था में वे रस रूप को प्राप्त होते हैं। भरत यह भी कहते हैं कि जिस प्रकार स्वस्थ चित्त वाला व्यक्ति ही भोज्य पदार्थों का आस्वाद ले सकता है उसी प्रकार सहृदय ही रस का आस्वादन कर सकता है। भरत ने रस की वस्तुपरक व्याख्या की है।

आचार्य अभिनव गुप्त:

अभिनव गुप्त का रस विवेचन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। रस विवेचन मे अलौकिकता का समावेश करने का श्रेय इन्हीं को है। आचार्य अभिनव गुप्त ने बताया कि 'रति' आदि स्थायी भाव पाठकों के अंतः करण मे वासना या संस्कार रूप से सदैव विद्यमान रहते है, जो विभावादि के संयोग से व्यंजनावृत्ति के अलौकिक व्यापार द्वारा 'रस' रूप मे व्यक्त होते हैं। वे रसानुभूति का आधार

- व्यंजना शक्ति को मानते हैं। उनकी मूल अवधारणा यह है कि काव्य हमारी भावोत्तेजना का साधन मात्र है, वह नया भावों की सृष्टि नहीं करता।

आचार्य विश्वनाथ :

आचार्य विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थ 'साहित्य दर्पण' में रस के विवेचन में परम्परा-गत विचारों का निरूपण किया है। उनके अनुसार सहृदयों के हृदय में स्थित रति आदि स्थायी भाव ही विभावादि से संयुक्त होकर रस रूप को प्राप्त होते हैं। अन्तःकरण में तमोगुण और सत्वगुण दब जाते हैं और सत्वगुण का उद्रेक होता है। रस चर्वण के अवसर पर अन्य संवेद्य विषयों का स्पर्श नहीं होता अतः रस समाधि अवस्था के समान ब्रह्मानन्द सहोदर कहा जा सकता है।

रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य

भरत मुनि के रस सूत्र में आए 'संयोग' तथा 'निष्पत्ति' शब्द की व्याख्या जिन चार आचार्यों ने की, उन्हें रस-सूत्र का व्याख्याता आचार्य कहा जाता है। इन आचार्यों के नाम है -
1) भट्ट लोल्लट 2) आचार्य शंकुक 3) भट्ट नायक
4) आचार्य अभिनव गुप्त

PAGE NO.:
DATE: / /

भट्ट लोल्लट का मत 'उत्पत्तिवाद' या 'आरोपवाद' कहा जाता है। उनके अनुसार 'निष्पत्ति' का अर्थ है उत्पत्ति तथा 'संयोग' का अर्थ है - उत्पाद्य - उत्पादक, गम्य - गमक तथा पोष्य पोषक सम्बन्ध। वे रस की स्थिति अनुकार्य (मूल पात्र) में मानते है। दर्शक अभिनेताओं पर मूल पात्रों का आरोप कर लेता है, इसीलिए इनका मत आरोपवाद कहा जाता है।

आचार्य शंकुक का मत 'अनुमितिवाद' कहा जाता है। इन्होंने 'चित्रतुरंग न्याय' के आधार पर रस निष्पत्ति की व्याख्या की। जैसे चित्र मे बने तुरंग (घोड़े) को देखकर हम उसे घोड़ा कह लेते है उसी प्रकार दर्शक नट मे राम आदि की प्रतीति कर लेता है और फिर उसमे रति आदि भावों का भी अनुमान कर लेता है। इस विलक्षण अनुमान को 'कला' प्रतीति' कहा जाता है। शंकुक के अनुसार 'संयोग' का अर्थ है 'अनुमान' और 'निष्पत्ति' का अर्थ है 'अनुमिति'।

269 Page no

भट्ट नायक के मत को 'भुक्तिवाद' कहा जाता है। रस निष्पत्ति मे इनका सबसे बड़ा योगदान साधारणीकरण का सिद्धान्त है। भावकत्व व्यापार को वे साधारणीकरण कहते है यथा इस व्यापार से विभावादि अपने - पराया की भावना से मुक्त होकर

सामान्यीकृत हो जाते हैं। इनके अनुसार 'संयोग' का अर्थ है - भोज्य - भोजक सम्बन्ध तथा निष्पत्ति का अर्थ है - "भुक्ति"।

आचार्य अभिनव गुप्त का मत 'अभिव्यक्तिवाद' कहा जाता है। वे रस को व्यंजना का व्यापार मानते है। जैसे जल के छींटे देने से मिट्टी में व्याप्त गन्ध व्यक्त हो जाती है, उसी प्रकार सहृदय में वासना रूप से निरन्तर विद्यमान स्थायी भाव विभावादि के संयोग से अभिव्यक्त हो जाते है। वे रस की सत्ता आत्मगत मानते है। रस सहृदय सामाजिक के हृदय में व्याप्त होता है। अभिनव गुप्त के अनुसार 'निष्पत्ति' का अर्थ है - अभिव्यक्ति और 'संयोग' का अर्थ है - 'व्यंग्य - व्यंजक सम्बन्ध'।

रस सम्प्रदाय के समर्थक आचार्यों में भरत - मुनि, आचार्य अभिनव गुप्त, आचार्य विश्वनाथ, आचार्य मम्मट, पण्डितराज जगन्नाथ, भट्ट लोल्लट, आचार्य शंकुक, भट्ट नायक आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

रस : काव्य की आत्मा -

काव्य को पढ़ते या सुनते समय हमें जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे ही रस कहा जाता है। काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द

सहोदर कहा जाता है। पाठक या श्रोता के हृदय में स्थित भाव ही रस रूप में परिणत होकर उसे आनन्द प्रदान करता है।

रस को काव्य की आत्मा या प्राणतत्व माना गया है। रसहीन काव्य निर्जीव है, अतः रस के बिना काव्य का अस्तित्व ही नहीं है। जैसे प्राण के अभाव में शरीर व्यर्थ है, उसी प्रकार रस के अभाव में कोई रचना काव्यत्व से ही रहित हो जाती है। रस ही कविता को प्राणवान बनाता है और वही पाठक या श्रोता को आनन्दमग्न करके भाव समाधि में पहुँचा देता है। अतः रस को काव्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना जा सकता है। यह काव्य का अन्तरंग तत्व है, बहिरंग तत्व नहीं। अतः अलंकार आदि की भाँति यह काव्य की शोभा नहीं बढ़ाता अपितु शोभा उत्पन्न करता है। काव्य के अन्य सभी तत्व रस के ही उपादान है। अतः निर्विवाद रूप में रस काव्य का के ही उपादान है। ॐ सर्वप्रमुख तत्व या काव्य की आत्मा है।

रस की अनेक विशेषताएँ आचार्य विश्वनाथ ने बताई है। यथा:

1. रस आस्वाद रूप है, आस्वाद्य नहीं
2. रस की उत्पत्ति सत्वगुण के उद्रेक से होती है,
3. रस ब्रह्मानन्द सहोदर है,

PAGE NO.:
DATE: / /

5 रसानुभूति अलौकिक होती है,
6 रस चिन्मय अर्थात् ज्ञान स्वरूप है,
7 रस स्वप्रकाशानन्द है,
8 रस अखण्ड है,
9 रस की अनुभूति तन्मयता की स्थिति में होती है।
रस लोकोत्तर चमत्कार है।

रस का स्वरूप

1) सहृदय सामाजिक के हृदय के वासना रूप से विद्यमान 'रति', आदि स्थायी भाव 'आलम्बन' द्वारा उद्बुद्ध होकर, 'उद्दीपन' विभाव से उद्दीप्त होते है। 'अनुभाव' उन्हे प्रतीति योग्य बनाते है और संचारीभाव पुष्ट करते है। इस प्रकार विभावादि के संयोग से ये 'रति' आदि स्थायी भाव ही 'श्रृंगार', आदि रसों के रूप मे परिणत हो जाते है।

2) रस की निष्पत्ति सामाजिक के हृदय मे तभी सम्भव हो पाती है जब उसके हृदय मे 'रजोगुण' तथा 'तमोगुण' का शमन होकर 'सतोगुण' का उद्रेक होता है। इस 3

रसानुभूति के समय विभावादि अपना स्वतन्त्र अस्तित्व त्यागकर स्थायीभाव मे लय हो जाते है अतः सहृदय को उनके पृथक-पृथक अस्तित्व का बोध न

DATE: / /

होकर समन्वित अनुभूति होती है। इसी को 'रस की अखण्डता' कहते हैं।

रस को 'वेद्यान्तर सम्पर्क शून्य' कहा जाता है। इसका तात्पर्य है कि रसानुभूति की स्थिति में सामाजिक इतना तन्मय रहता है कि उसे अन्य वेद्य विषयों का ज्ञान नहीं रहता। वह राग-द्वेष से ही नहीं अपितु देशकाल की सीमाओं से भी मुक्त हो जाता है।

रस को स्वप्रकाशानन्द एवं चिन्मय कहा गया है अर्थात वह ऐसी आनन्दमयी चेतना है जिसमें इन्द्रियानुभूति का अभाव तथा चैतन्य आत्मास्वाद का सद्भाव रहता है।

रस को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा गया है। जिस प्रकार समाधि की दशा में योगी को ब्रह्मानन्द की अनु-भूति होती है और उस ब्रह्मानन्द में अन्य विषय उसे स्पर्श नहीं कर पाते उसी प्रकार रसास्वादन काल में सहृदय सामाजिक को भी अन्य विषय स्पर्श नहीं करते। ब्रह्मानन्द लौकिक विषयों से पूर्णतः असम्पृक्त होता है तथा स्थायी होता है, जबकि रस का आनन्द लौकिक विषयों से पूर्णतः असम्पृक्त नहीं होता तथा चिरस्थायी भी नहीं होता, इसी कारण रस को ब्रह्मानन्द न मानकर ब्रह्मानन्द

सहोदर माना जाता है।

रस की अलौकिकता

1) रसानुभूति मे कारण रूप से व्याप्त विभाव, अनुभाव, संचारी सभी लौकिक होते है, किन्तु काव्य मे वर्णीत होने पर इनमें विभावन नामक अलौकिक व्यापार का समावेश हो जाता है जो रस को लौकिक बना देता है।

रस की अलौकिकता 'साधारणीकरण' व्यापार के कारण होती है। यह व्यापार न केवल सामाजिक को साधारणीकृत करता है अपितु उसे देशकाल के बन्धनों से भी मुक्त करता है।

रस न तो सविकल्पक ज्ञान है और न निर्विकल्पक ज्ञान। वह इन दोनों से भिन्न अलौकिक ज्ञान है। सविकल्पक ज्ञान मे पदार्थ के स्वरूप के साथ उसके नाम, जाति का बोध होता है जबकि निर्वि-कल्पक ज्ञान में नाम, जाति

PAGE NO.:
DATE : / /

रस सिद्धान्त - भरतमुनि - नाट्यशास्त्र
6 वी अध्याय मे रस का विवरण मिलता है।

1 पदार्थ : पदार्थो से जो रस निकलता है
2 आयुर्वेद - सोमरस (अमृत)
3 साहित्य - आनंद . आस्वाद (साहित्य से आनंद)
4 भक्ति - ब्रह्मानंद रस (ब्रह्म का भक्ति का जो आनंद मिलता)

1) पदार्थ :

2) आयुर्वेद :
सोमरस
मधुआ का पेड

3) साहित्य :
साहित्य का अर्थ हुआ आनंद
साहित्य पढ़ने के बाद हमे आनंद मिलती है वो ही रस

स: = वह

PAGE NO.:

DATE: / /

4) भक्ति :

~~ब्रह्मानंद~~ - भक्ति मे आनंद

~~इश्वर के ध्यान मे लीन होते है आनंद मिलता~~

~~है वो रस है~~

तैतिरीय उपनिषद

रस वै स:

स: = वह = परमात्मा, ब्रह्म ही रस है।

उपनिषद - इश्वर ज्ञान भक्ति की बात की गयी है

उपनिषद - 108 ~~है~~

विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्ति

रस के अवयव - 4 है

1 विभाव = कारण से रस का भाव उत्पन्न होता है।

2 अनुभाव =

3 व्यभिचारी = 33 संचारी भाव

संयोगा = रस

निष्पत्ति = उत्पत्ति

4) स्थायीभाव = ~~संख्या = 33 संचारी भाव~~

मन मे हृदय मे पेहले से ही विद्यमान है।

1) विभाव

दो प्रकार

1) आलम्बन

2) उद्दीपन

PAGE NO.:
DATE: / /

विभाव

1) आलम्बन उद्दीपन

आश्रय विषय/आलम्बन आलम्बनगत चेष्टायें प्रकृति

श्रृंगार भाव परिवर्तित होता रहता है
Ex : आश्रय - दुश्यंत
विषय - शंकुतला
चेष्टायें - भाव उत्पन्न
उद्दीपन - रस का उद्दीप्त होना जगाना।
प्रकृति - श्रृंगार वर्णन चल रहा हो प्राकृतिक सौंदर्य मन मे श्रृंगार रस उत्पन्न कराता है।

2) अनुभाव :
1) कायिक
2) सात्विक
3) वाचिक
4) आहर्य

} - मूह से बोलना
} कायिक मे आ जाते है। - वेशभूषण

अनुभाव
अनु = पीछे - भाव - भाव प्रदर्शित होता है।
कायिक - शरीर शारिरिक रूप से प्रदर्शित करता है
सात्विक - जिसमे - रस वर्णन देख जो आँखो मे आँसु आते है अपने आप भाव दिखायी देता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

व्यभिचारी :
संचारी भाव नाक-नाक रस के साथ संचार करता है
संचारी संख्या - 33

रस का स्वरूप :

विश्वनाथ : साहित्य दर्पण

सत्वोद्रेकाखण्डस्वप्रकाशानंद चिन्मयः

वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मस्वादसहोदरः

सात्विक - सत्य ब्रह्म
उद्रेक - रस जगानेवाला उद्दीपन
अखण्ड - रस अखण्ड है
चिन्मयः - विलक्षण
सत्व अखंड है स्वयं प्रकाश होता है आनं
देता है रस विलक्षण है जिस

अंग - अनयत

PAGE NO.:
DATE: / /

## रस के भेद / प्रकार

| रस | स्थायी भाव |
|---|---|
| 1) श्रृंगार | रति |
| 2) वीर | उत्साह |
| 3) हास्य | हास |
| 4) करुण | शोक |
| 5) रौद्र | क्रोध |
| 6) वीभत्स | जुगुप्सा (घृणा) |
| 7) भयानक | भय |
| 8) अद्भुत | विस्मय |
| 9) शांत | निर्वेद |

आधुनिक काल :

| | |
|---|---|
| वात्सल्य | वत्सल (पुत्र स्नेह) |
| 10) भक्ति रस | भगवत प्रेम |

PAGE NO.:
DATE: / /

श्रृंगार - रस

विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव संयोग से जब रत नाम स्थायी भाव जागृत होता है वहाँ पे श्रृंगार रस होता है।

श्रृंगार रस दो प्रकार
1) संयोग - मिलन, खुशी, प्रसन्न
2) वियोग - दुःख पछतावा

वियोग के 3 भेद है।
1) पूर्वराग - मिलन की स्थिति पहले ही प्रेम होता है
2) मान - नायक - नायिका दूर होते है गुस्सा नाराज होते थे।
3) प्रवास - नायक छोड़कर कहीं प्रवास के लिए चला जाता है।

वीर रस

विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव संयोग से जब उत्साह नाम स्थायीभाव जागृत होता है। वहा पर वीर रस होता है।

वीररस के 4 भेद है।
युद्ध वीर - पृथ्वीराज चौहान
दान वीर - कर्ण
धर्म वीर - महाभारत
दया वीर

तर्क - कुतर्क (संबंध न हो) - मतलब नही होता
तर्क - वितर्क (एक विषय पर बात करना) संबंध मतलब होता है

PAGE NO.:
DATE: / /

रस निष्पत्ति :

1 भट्ट लोल्लट
2 आचार्य शंकुक
3 भट्ट नायक
4 अभिनवगुप्त

1) भट्ट लोल्लट : दर्शन :- मीमांसा
सिद्धांत : आरोपवाद या उत्पत्तिवाद
अभिनेता - रस मूल पात्र मे होता नट-या
आरोप = -नटि मे होता है ।
अपनाना दर्शक - नट या नटी का अभिनय
वास्तविक रूप से दर्शक आरोप को
महसूस करलेता है।

मूल रस वास्तविक रूप मे होता है।
बाद मे आरोप किया जायेगा।

2) आचार्य शंकुक :- अनुमितिवाद
दर्शन - न्याय दर्शन
चित्र - तुरंग - न्याय
घोडा अनुमान लगाना
चित्र देखकर अनुमान लगाना तब
रस की उत्पत्ति और अनुभूति होता है।

PAGE NO.:

DATE : / /

3) भट्टनायक :- भोगवाद | भुक्तिवाद
सहृदय साधारणीकरण - शब्द प्रयोग किया।
तीन शब्द दिये है।

1) अभिधा - शब्दो का अर्थ - अलग अर्थ नहीं है।

2) भावकत्व - नट और नहि भाव मे डूबे उसकी देखा करण जोड़ लेगा और सहृदय तो है साधारणीकरण - सहृदय कर सकता है

3) भोजकत्व : रस की निष्पत्ति होती है

4) अभिनवगुप्त - अभिव्यक्तिवाद
दर्शन - शैवदर्शन
किताब का नाम : अभिनवभारती - नाट्य शास्त्र का टीका (विचार, विमर्श) व्याख्या

10वी से 11 वी सदी इनका समय है
स्थायी भाव से जोड़ते है
बहुत लोग माना समर्थन दिये है - मन मे हृदय से पहले से हो विद्यमान है
रस या पाठक दर्शक के मन हृदय म बीज रूप मे पड़ा है और अभिव्यक्त हो जाता है वही बीज

अभिव्यक्तवाद : प्रकाशमान रस दिखने लगेगा।

साधारणीकरण :
जिसको देख कर :

1) अनुकार्य – (राम सीता) जो मूल पात्र होता वह अनुकार्य है।
2) अनुकर्ता - नाटक करने वाला, नट और नटी

साधारणीकरण :
जिसको देख कर जो मूल पात्र को दुःख होता है। तो उसे देखकर हमें भी दुःखी होता है।

सहृदय : बड़ा हृदयवाला।

1) भट्ट नायक :
विभाव, अनुभाव, व्यभीचारी का साधारीकरण होता है।

1) विभाव :
1) आलम्बन
2) उद्दीपन
3) आश्रय

1) आलम्बन :
मुसकुराना प्रेम भरी दृष्टि से देखता है। तो वहा पर उद्दीपन होता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

विभावादी :
विभाव, अनुभाव, व्यभीचारी भाव.

२) अभिनव गुप्त :

PAGE NO.:
DATE: / /

आचार्य रामचंद्र शुक्ल :-
निबंध : साधारीकरण व्यक्ति वैचित्र्य वाद
साधारीकरण आलंम्बनत्व धर्म का होता है
आलंम्बन से साधारीकरण होता रहता है।

डॉ नगेन्द्र :
साधारीकरण कवि की अनुभूति का होता है।

रचनाकार शृंगार रस का वर्णन कर रहा है उसमे अनुभव करता है
कवि जितना अनुभव करता है उसी तरह पाठक भी अनुभव करता है